

gen Riāa-Tar. 6, 16. — 5) किन् heruntergekommen, entkräftet, ermüdet: स्त्री०, भार०, मार्ग० Vjup. 209. — Vgl. भिद्.

caus. क्दयति 1) abschneiden, abhauen Dhātup. 33, 80 (किद्). मूले ङाङ्क. Çr. 17, 1, 8. 15. Gobh. 4, 2, 9. नाभिनाडीम् Suçr. 1, 369, 1. यन्मे बाहुमचि-
च्छिद्: MBh. 7, 5954. क्दित H. 1490. — 2) abschneiden —, abhauen —, zerhauen lassen: द्वावोष्ठौ क्दयेन्नृप: M. 8, 282. क्दस्तौ 283. अङ्गुली 277. (तम्) क्दयेन्नृपः नृपः 292.

— intens. चेच्छिद्ति P. 7, 4, 65, Sch. चेच्छिद्यते 83, Vārt. 2, Sch. (ed. Calc.)

— desid. s. चिच्छिद्.

— अनु der Länge nach durchschneiden(?): अनुच्छिद्न्निव (उदासयेत्) ङाङ्क. Çr. 2, 8, 13. Viell. उच्छिद्न् mit dem अ neg.

— अत्तर abschneiden, intercludere: तं तु वा मा गिरौ सप्तमुदकमत-
प्रक्षेप्तौ Çat. Br. 4, 8, 4, 6.

— अप absplalten, abtrennen: शकलम् Çat. Br. 3, 6, 4, 11. Kātj. Çr. 3, 2, 5. अत्तापच्छिन्न Schol. zu Kātj. Çr. 3, 7, 17. 8, 2. एतस्यै वा एषाप-
च्छिद्यैषैव पुनर्भवति Çat. Br. 5, 3, 4, 9. अत्तरं क्दस्मै वागिनं नापच्छिद्यते
wird ihm nicht entzogen Ait. Br. 1, 13. — Vgl. अपच्छेद्.

— अव 1) abtrennen, scheiden: अव वा एष सुवर्गालोकाच्छिद्यते TS. 2, 2, 5, 4. 3, 2, 4, 1. 2. Bālab. 33. अवच्छिन्न ununterschieden Jogas. 2, 31.

— 2) voneinanderreißen, aus seinem Zusammenhange reißen, unter-
brechen: अवच्छिन्न Lātj. 10, 3, 13. वनवृत्तावच्छिन्नाकाशयोः, वनवृत्त-
द्वच्छिन्नाकाशयोः Vedāntas. (Allah) No. 34. दिक्कालानवच्छिन्नाय — शा-
त्ताय तेजसे Bhārtr. 2, 1. — Vgl. अवच्छेद् fgg.

— पर्यव auf beiden Seiten rings abtrennen: उभयत एनं विशः पर्यव-
च्छिन्नदानीति Ait. Br. 3, 19.

— व्यव 1) abschneiden: प्रजातनुं मा व्यवच्छेत्सी: (sic) Taitt. Up. 4, 11, 1. — 2) abschneiden, abtrennen, scheiden: व्यवच्छिद्य तु राजानम्
— रथानीकेन मक्ता सर्वतः पर्यवारयत् nachdem er ihn (von den Andern)
abgeschnitten hatte MBh. 7, 1166. विशे तत्राद्यवच्छिन्नात् Çat. Br. 12, 7, 3, 15. राष्ट्रात् 13, 1, 6, 3. यदेवास्यात्र कामानां व्यवच्छिद्यते 6, 6, 4, 11.
ङाङ्क. Çr. 2, 12, 10. 11. व्यवच्छिन्न unterschieden Tarkasañgr. 58. =
भिन्न Triek. 3, 1, 18. — 3) voneinanderreißen, auseinanderthun; unter-
brechen: (शर्म) अवघातमुपानीय व्यवच्छिन्नेन मुष्टिना R. 3, 50, 17. मन्त्र-
लिङ्गैर्व्यवच्छिन्ने भजतो न विदुः परम् Bhāg. P. 4, 29, 45. अव्यवच्छिन्न un-
unterbrochen, in Verbind. mit संतत Çat. Br. 4, 3, 5, 13. 16. 7, 2, 4, 9, 3,
3. 7, 4, 2, 20. Ait. Br. 1, 11. अव्यवच्छिन्नधारिणैः समुद्रायसमैर्धनैः Hariv. 3380. अव्यवच्छिन्नपिण्डतैः (गैः) adv. MBh. 7, 4746. — 4) sich zu (प्र-
ति) Etwas entscheiden: इति व्यवच्छिद्य स पाण्डवेयः प्रायोपवेशं प्रति
Bhāg. P. 4, 19, 7. — Vgl. व्यवच्छेद्.

— आ 1) abreissen, abschneiden, zerschneiden, zerbrechen: कृत्याकृतः
प्रजा नृमित्रा च्छिन्धि वार्षिकम् AV. 4, 19, 1. 7, 74, 2. 12, 3, 51. तृणम्
Çat. Br. 4, 9, 2, 16. 2, 4, 2, 17. 3, 5, 2, 18. कुशीम् 6, 2, 10. आक्त्रिन् abgeris-
sen Kātj. Çr. 4, 1, 11. ये चाच्छिन्दन्ति वृषणान् MBh. 12, 9377. आक्रम्य
मानुषं कण्ठमाच्छिद्य धनमोमपि 1, 5936. आक्त्रिन्स्याम्यकृमेतस्य धनुर्धाम-
पि चाक्त्रे 4, 1967. आक्त्रिन् धनुरिव निर्गुणम् Mārkā. 131, 17. Bhāg. P. 9,
13, 33. जगदाच्छिद्य धावत् 3, 21, 18. — 2) herausnehmen: पादावाच्छिद्यो-
त्क्रामति तस्माद् दैतप्रतमाङ्गराच्छिद्यस्येति Çat. Br. 10, 3, 2, 13. स य-

था प्रसितमनुकृपाच्छिद्य परास्ये देवं तत् 3, 3, 2, 8, 4, 8. हिरण्यं सहसा-
च्छिद्य Kātj. Çr. 7, 8, 27. असिमाच्छिद्य Daçak. 117, 4. — 3) abziehen, ent-
fernen: अस्मिन्पथावत्सखि वर्तमाना भर्तारमाच्छिद्यस्यसि कामिनीभ्यः MBh. 3, 14710. कर्मात्तरार्जितेभ्यः स्वर्गादिलेकिभ्य आच्छिन्नति abschneiden von,
ausschliessen von Kull. zu M. 4, 219. — 4) entreissen, wegnehmen, rauben:
कृतात्तेन। आच्छिद्य मम मन्दाया नीयसे Hariv. 4836. (कृद्यम्) ज्ञातवेदोमुखा-
न्मायी मिषतामाच्छिन्नति नः Kumāras. 2, 46. राजपुत्रीरिमाः शतम्। आच्छि-
द्य राज्ञो गेहेभ्यः परिवारं न्यधान्यम् || Kathās. 11, 34. आच्छिद्य सर्वं च धनं
कुरुभ्यः MBh. 4, 2147. 2159. 2240. 1489. 3, 1392. 5, 4924. 12, 2580. 13, 3180.
Mārkā. 163, 7. Pañkāt. 222, 4. Bhāg. P. 6, 7, 39. 8, 19, 32. — 5) nicht beachten,
keine Rücksicht auf Etwas nehmen: यत्नो संचोदयति मे वच आच्छिद्य R. 2, 24, 33. यथा च मन्ये दुर्जीविमेवं न सुकरं धुवम्। आच्छिद्य पुत्रे निर्याते
कौशल्या यत्र जीवति || dessenungeachtet, dass der Sohn fortgegangen
ist, 57, 20.

— अवा entreissen: दैत्यकुस्तादावच्छिद्य Vikr. 15.

— उपा mit sich fortziehen, entreissen: मुक्तास्ततो यदि वन्धादेवदत्त
उपाच्छिन्नति तस्मादपि विष्णुमित्रः Bhāg. P. 5, 14, 24.

— समा dass: कालरात्र्या समाच्छिद्य नीतः R. 6, 8, 17.

— उद् 1) ausschneiden, abschneiden: नोच्छिन्त्यादात्मनो मूलं परोषां
चातितृज्या MBh. 7, 139. — 2) ausrotten, zu Grunde richten, vernich-
ten, Jmd den Untergang bereiten AV. 7, 113, 1. उच्छिद्यमानेषु भृगुषु MBh. 1, 6814. 16, 20. किं वा रिपूंस्त्व गुरुः स्वयमुच्छिन्नति Ragh. 5, 71. 2, 23.
Pañkāt. 133, 12. उच्छिद्यमाने रामेण भरतं त्रातुमर्हसि R. Gorra. 2, 7, 30.
MBh. 12, 2612. Daçak. in Benf. Chr. 197, 15. दुःखत्रयम् Sch. in Wils.
Sāṅkhjak. S. 10. उच्छेत्तुं प्रभवति यत्र सप्तसत्तिस्तत्रैषं तिर्मरमपाकरोति
चन्द्रः Çāk. 157. उच्छिन्न (neben विनष्ट) zu Grunde gegangen, verworfen,
erbärmlich Mārkā. 34, 15. — 3) störend in Etwas eingreifen, hemmen,
unterbrechen: तनुच्छिन्त्यामस्य कामं कथं नु यमसादेन MBh. 1, 4891. क-
ञ्चिन्म्यायानुच्छिद्य कोशस्ते ऽभिप्रपूर्यते 13, 678. एते हि (स्थापितो भावाः)
एतेष्वतरा उत्पद्यमानैस्तेस्तेर्यत्तैर्हितैर्हितैश्च भवैरनुच्छिन्नाः प्रत्युत परि-
पुष्टा एव Sāh. D. 76, 9. pass. gehemmt. — unterbrochen werden, aufhören,
ausgehen, mangeln: नोच्छिद्येरन्यथा क्रियाः MBh. 1, 930. अर्थन तु विहो-
नस्य पुरुषस्यात्पमेधसः। उच्छिद्यते क्रियाः सर्वा ग्रीष्मे कुसरिता यथा ||
Pañkāt. II, 92. तृणानि भूमिरुदकं वाक्त्रुर्थो च सूनता। एतान्यपि सतां
गेहे नोच्छिद्यते कदा च न || M. 3, 101. अविवेको युक्तिः अवघातश्च न
वाध्यते नोच्छिद्यते Sch. zu Kap. 1, 60. अनुच्छिद्यमानतयावस्थानात् Sāh. D.
73, 2. — Vgl. उच्छिन्ति, उच्छेत्तु fgg. — caus. ausrotten, vernichten
oder vernichten lassen: प्रातः सकलान्यपि सत्त्वान्युच्छेदयिष्यामि Pañkāt.
33, 12.

— व्युद् pass. mit den Personalendungen des act. 1) sich ablösen, ab-
brechen: उभयत्र प्रसक्तस्य धर्मं चाधर्म एव च। पलार्थमूलं व्युच्छिद्येतेन
नन्दति शत्रवः || MBh. 12, 3923. — 2) eine Unterbrechung erleiden, auf-
hören: विनष्टे च ममानुजे। पिण्डः पितृणां व्युच्छिद्येत MBh. 1, 6188. की-
र्तिर्मै व्युच्छिन्ना hat ihr Ende erreicht 3, 13332. अव्युच्छिन्न ununterbro-
chen: करा दिनकृतः — अव्युच्छिन्ना स्रजवः Varāh. Brh. S. 29, 11. सौधत्र
MBh. 3, 353. घोष Hariv. 2333. ०प्युप्रवृत्ति Vikr. 110. तत्रैकावयवं ध्या-
येदव्युच्छिन्नेन चेतसा Bhāg. P. 2, 1, 19.

— समुद् zerreißen und zugleich ausrotten, vernichten: समुच्छिन्नवा-